आपातकाल में सृजन फुलवारी

रीना वर्मा प्रेरणा

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

रीना वर्मा प्रेरणा

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-176-3

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेंल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020 रीना वर्मा प्रेरणा

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY REENA VERMA PRERNA

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेंरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेंशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	तुम क्या जानो	6
2.	हे!प्रभु	7
3.	तेरे शहर के लोग	8
4.	रिश्ता तेरा मेंरा	9
5.	गर्व	10
6.	भय	11
7.	इतवार	12
8.	आरोप	13
9.	आवेग	14
10.	वो	15
11.	मेहनत	16
12.	अंतर्द्वंद	17
13.	गुस्सा	18
14.	मैंने देखा है	19
15.	मन के अंधकार	20
16.	अटूट प्रीत	21

तुम क्या जानो

तुम्हारा एक छोटा सा शब्द
क्या देता है मुझे
भर देता है हौसला उत्साह
छेड़ देता है तान जैसे
जिंदगी रूपी वाद्य यंत्र का
उस छोटे से अपने पन से
लबरेज उस शब्द में
दिखता है परवाह और प्यार
उस एक शब्द कहो
या एक बून्द कहो
मेंरे मन रूपी मुरझाये
तरु को हरा भरा कर देता है
जिंदगी के नए जंग से
देता है ताकत लड़ने की
तुम क्या जानो
शब्दों के कृपण हो तुम
लेकिन ठीक करते हो
एक बून्द नहीं सभंलता तो
बरसात होगी तो क्या होगा
हां बस एक बून्द काफ़ी है
रोज जीने के लिए
दुनिया का जहर पीने के लिए
नहीं चाहिए लम्बी बाते
नहीं चाहिए झूठे वादे
परवाह भरा एक शब्द
मेंरे जिन्दा रहने के लिए
है काफ़ी ऐ मेंरे हमसफ़र।

हे प्रभु

कभी कभी आप क्रुद्ध हो
दुनिया का विनाश करने लगते हो
क्यों आप इतने रुष्ट हो
मतलबी इंसान को सीखना होता
ज़ब भी सबक कोई
तब तब दुनिया में प्रलय लाते हो
ज़ब पूजा प्यार प्रार्थना
केवल स्वार्थ से हो भरा
तब आपका मन भी दुखता होगा
ज़ब बेपरवाह हो जाय
ये जग सारा और छाने लगे
घनघोर सा अँधियारा
जलाने को आशा का दीपक
आते है तेरे शरण में
गर्व और अहम का घट ज़ब भर जाता है
तब प्रभु तू अपना खेल
कुछ ऐसे दिखाता है
हर युग में प्रलय लाता है
ज़ब हो जाता है मन और तन निर्मल
तब नवजीवन का अंकुर
प्रभु करते है प्रस्फुटित
हे प्रभु सबकी रक्षा करो
संसार से प्रलय दूर करो
हे प्रभु कृपा करो
हे प्रभु जीवन की रक्षा करो
हे प्रभु महामारी दूर करो
हे प्रभु इंसानों का भूल अब तो क्षमा करो
हे प्रभु अब गुस्सा शांत करो
भय और आक्रांत दूर करो
शरणागत की रक्षा करो
हे प्रभु महामारी का अब तो संहार करो!

तेरे शहर के लोग

तेरे शहर के लोग अपने लगते है
ज़ब से तुम अपने हुए
तेरे अपनों में भी तुम्हे देखते है
उनसे तेरी बाते करना
जैसे तुझसे बाते करना
और तुम खफा हो बैठे
ज़ब और से बातें की खातिर
तुम्हारे अहसास के लिए
मगर तुम समझे कुछ
हमारी ख्वाहिश थी कुछ
तुम्हे गलत फहमी हो गई
जिससे मिठास की उम्मीद थी
उसने खटास भर दी
इस कोमल उर को
कर दिया लहू लुहान
सर पे अपने उठा लिया
अब दिल संभाले घूमते है
खुदको कोसते है
उन लम्हों के लिए
जो खता हमसे हुयी
नादाँ थी न समझी
एक लड़कपन की यारी
एक समझदार से हुयी है
मेंरा लडकपना छूटता नहीं
उनके छूटे जमाना हुआ!

रिश्ता तेरा मेरा

रेशम से धागों सा
रिश्ता है तेरा मेंरा
हल्के से खिचाव से उलझ जाता है
ये धागा प्रेम का
ये धागे भी न
कितना कुछ बनाते मोतियों सँग मिल
खूबसूरत सी माला
ये धागे हर कुछ
टूटा फटा ठीक कर जाते
बड़े संभाल कर रखना
प्यार से ये धागा
तेरे मेंरे प्रेम का
ये धागा टूटे ना
ये बंधन छूटे न
आपस की खींचातानी में
गांठ न पड़ जाये
गर हुआ ऐसा
दिल खामोश हो जायेगा
लब उदास हो जायेगे
जिंदगी की राहें हो जाएगी वीरान
और ये जीवन
बन जायेगा जैसे मनहूस सा शमशान
ज़ब भी कभी
झूठी मुठी लड़ते हो न
डर सा लगता है
ये धागा कहीं न टूट जाये
और तू न मुझसे रूठ जाये
ये धागा माना है
बड़ा ही नाजुक मगर
हम दोनों इसे संभाले
न टूटेगा कभी और
तेरा मेंरा साथ न छूटेगा कभी।

गर्व

जिन्हे गर्व था खुद पे
वो भी चुप हो गए
जिन्हे अहम था अपनी
बड़ी काबलियत का
वो भी आज सुस्त है
जो उड़ते थे आकाश में
वो भी परकटे पंछी बन
एक कोने पड़े है
जिनकी थी बड़ी बड़ी
कभी न खत्म होने वाली
अनजान सी ख्वाहिशें
वो गुमनाम सी है
जो निभा रहे थे दुश्मनी
किसी को बर्बाद करने को
वो भी चुपचाप से है
जो दोस्ती थी दाँत कटी
वो भी अलग थलग
ये वक़्त और उसका चक्र
ऐसा चला है कुछ
जो भाग रहे थे पीछे
जिंदगी के अंधाधुंध
अब मौत से डर के
कोने में सुरक्षित पड़े है
ये वक़्त सिखाता है
जीवन की सही चाल
कब कहाँ कैसा किसका
होगा क्या हाल
कोई कितना भी बन जाये
चालाक होशियार मगर
नहीं चलती वक़्त के आगे
किसी की होशियारी
कहता वक़्त का चाल
वक़्त के तराजू में
सब तौले जायेगे
वक़्त कहता है अब वक़्त है
संभाल लो अपनी चाल
मत करो किसी का
ऐसे बुरा हाल और
मत करों गुमां अपनी
छोटी बड़ी हस्ती पे
इंसान को समझो इंसान
मत करो बेजुबां को परेशान
मत करो धोखा धड़ी
देख रही सब वक़्त की घड़ी
कभी चली तुम्हारे इशारे पे
कभी चलाएगी तुम्हे
उलटे अपने इशारे पे
सोचो सोचो सोचो
ऐ इंसान ये वक़्त क्या कहता
क्यों कहता है कैसे
जीवन की गाड़ी तुम्हारी
चलती है इसके इशारे पे
न समझे तो नादान
चुकाना पड़ेगा मूल्य
ज़ब टूट पड़ेगा आसमान!

भय

जिंदगी तू इतनी निर्मम और कठोर क्यों है
जो देती है उसे हरदम कर देती है दूर
या बना देती है एक छलावा
इंसानों को प्यासा करती
और सामने जहरीला समंदर पिए तो भी मरे
और न पिए तो भी मर जाये बता
कुछ अपना नहीं होता
मगर सब कहने को अपने
कोई किसी को समझता नहीं
मगर दिखावा सभी करते है
जिंदगी जिसे जो होता
जान से भी प्यारा उसे ही
बस छिन लेती है तू चाहे
कोई किसी चीज से प्यार करे
इंसान जानवर बगीचा या अपनी प्यारी सवारी
हरदम डराती है तू जिंदगी
समर्पण भय उत्पन्न करता है
चाहे माँ का हो या पत्नी का
चाहे दोस्त का या माली का
चाहे पति का हो या पिता का
जिंदगी और भय चलते साथ
जीवन के अंतिम सांस तक
जो अपना है छूट न जाये
जो सपना है टूट न जाये
जीने के लिए वजह चाहिए
और हर वजह में समर्पण
भय तकलीफ देता है और
जिंदगी तुझसे नाराज होते सभी
तू जो खेल खेलती है न
जो समझ जाता है वो खेलता नहीं
जो नहीं समझता वो तेरी कठपुतली बन नाचता
जीवन भर तेरे इशारे पे जिंदगी तू और तेरे खेल निराले
तू चाहे तो जिन्दा रखे, तू चाहे तो भय में मार डाले।

इतवार

जो करते थे इंतजार
कब आएगा इतवार
जियेंगे जी भर के
सप्ताह भर की भागदौड़
और एक दिन का विराम
हर इतवार करते
सभी अपने घर से
अपने बच्चों से और
अपनी प्यारी आदतों से प्यार
इस इतवार का स्वागत
करते थे सभी नाज से
खुद पर इतराता था
ये घमंडी इतवार
बड़ी जल्दी खत्म हो जाता था
हमारा प्यारा इतवार
सब सोचते थे कास
थोड़ा और लम्बा होता
ये हमारा इतवार
थोड़ा और आराम
थोड़ा भागदौड़ से निजात
ख्वाहिशें होती है
पूरी हर किसी की अधूरी
लो मिल गया
एक लम्बा सा
कई दिनों का इतवार
जी लो सब जी भर के
कर लो छूटी ख्वाहिशें
अब तो पूरी
जीवन में जो लम्हें मिले
उसे जी भर के जी लो
रूठों को मना लो न
सपनों को सजा लो न
फिर न शिकायत करना
चाहे स्त्री या पुरुष
ये कह की फुर्सत कहाँ
छोटे छोटे चीजों के लिए
जिंदगी थम गई
जीवन चिड़ियों का घोंसला
मगर फिर खुश रहने वाले
खुश रहा लेते है
तिनका तिनका जोड़ जोड़
ये इतवार अबकी गया
तो फिर न आएगा
गलती से भी कोई
अब नहीं मनाएगा
की ये इतवार कब आएगा
कितना थक गया मैं
ये इतवार कब आएगा।

आरोप

दुनिया में एक ऐसा शब्द
जो अपराध के बाद लगता है
कभी बिन किये लगता है
कभी दोस्ती में कभी दुश्मनी में
बिन सोचे समझे कभी
निर्दोष पे थोपा जाता है
कभी शक के आधार पर
कभी बदकिस्मती से
कभी जान बुझ कर लगता है
जिस पे लगता है या लगाया
जाता
उसके पास शब्द नहीं होता
किस से शिकायत करे या
किसे सफाई दे उस बात की
जो थी नहीं या हुयी नहीं
मगर आरोप तो एक कलंक
ऐसा धब्बा जो छूटता नहीं
उर से मन से मस्तिष्क से
लगाने वाले को नहीं अहसास
उसने क्या किया क्यों किया
कुछ कटाक्ष कुछ कड़वी बोली
कुछ जहर बुझे तीर सा अहसास
उफ्फ जिस पे लगती है
ये वो जानता है या उसका मन
फिर भी उसका पागल पन
जिसे दिल से भगवान माना
उसने ही तो लगाया क्या हुआ
भूल जाता है आरोप और
होता प्रतिबद्ध समर्पित
ये सोच की जो प्रतिज्ञा खुद से
न टूटेगा कभी जिसे कहा अपना
न छूटेगा कभी चाहे जमाना
पल पल बदलता फ़ितरत अपनी
अनुरक्त कैसे हो विरक्त कैसे
बातें तो थी कभी झूठी सही
अपने तो थे अब कभी बेगाने सही
उनकी महफ़िल में सब उनके
कोई अपना न सही मगर
जिंदगी फिर कटेगी यादों के साथ
वो यादें जिसमें आरोप नहीं
होती थी तारीफे बेगाने की
ये सोच सोच कभी कभी
वो काट लेता है सजा उसकी
जो अपराध किया ही नहीं
हां वो जिसे कहते है लोग
वो जो अपनों से ज्यादा थे है!

आवेग

चाहे क्रोध में आये या
या आये अनुरक्ति में
सही गलत का फर्क
नहीं कर पाता कोई
अति होती है अगर
नियति भी संभाल पाती नहीं
उसका जो हो प्रारबध
माना आवेग की गति
होती अति तीव्र सबसे
मगर इतिहास बना गया ये
हर युग में हर रूप में
न सोचा न समझा बस
हो जाते सवार इसमें
और मन रूपी तुरंग
उसका भयानक आवेग
कहां होती समझ
सही की गलत की
इसको तो परिणाम से
बस होना है रूबरू
एक प्यास है जुनूनी
खत्म करने की छटपटाहट
जो शुरू हुआ कभी
या किसी ने किया शुरू
अगर सोच ले समझ ले
तो इंसान भगवान हो जाये
न रोये न चिल्लाये और
आवेग का गुलाम कभी
किसी परिस्तिथि में न हो पाए।

वो

वो सोचती सबकुछ
इंसानियत का दया दर्द
करती महसूस सबकुछ
आंसू किसी के बहे
हाथ बढ़ा कर पोंछतीं
वो सबके दर्द दुःख समझती
सबकी खुशी में खुश होती
सबके गम में रोती
मगर. लोग समझते कुछ
वो किताब जो पढ न सका
कोई कभी भी मैं
जिसे गलत समझा गया
वो जिसे नादाँ समझा गया
वो जिसे अल्हड़ समझा गया
वो जिसे समझने के लिए
कभी नहीं समझा गया
वो जिसका गलत अर्थ
निकला गया हरदम मैं
फिर भी चलती रही यूं ही
चलती रहूंगी हरदम मैं
कोई समझे न समझे
अब परवाह नहीं
खुद की सहेली खुद मैं
खुदको समझती समझाती
खुदका हौसला बढ़ाती मैं
हाँ वो हर एक औरत।

मेहनत

इंसान को जन्म से मृत्यु तक
करनी पड़ती है मेहनत
जन्म लिए रो रो कर
भूख मिटाने के लिए मेहनत
बाद उसके कदमो पे चलने
धरती पर करते मेहनत
बाद उसके विधा प्राप्ति
न जाने कितनी मेहनत
बचपन से यौवन के बाद
रोटी कमाने को मेहनत
प्रेम हो जाये किसी से
उसको साबित करने में
दोस्ती निभाने में मेहनत
समाज में छवि बने
उसके लिए मेहनत
खाना खाने में मेहनत
और मजे की बात उसे
पचाने में भी मेहनत
गरीब खाना खाने को मेहनत
अमीर खाना पचाने को मेहनत
तमाम उम्र कभी अपने
कभी अपनों के लिए मेहनत
ये रात बनी आराम के लिए
वर्ना कुछ लोग बहुत कुछ
पाने को करते मेहनत
जो नहीं करते है वो
करते शिकायते हज़ार
और बहाने लाख जो
जी चुराते मेहनत से
खुद खत्म करते खुद से!

अंतर्द्वंद

अच्छा कौन बुरा कौन
सही कौन गलत कौन

सच क्या झूठ क्या
धर्म क्या अधर्म क्या
इंसान कौन हैवान कौन
फ़र्ज़ कौन अधिकार कौन
अपना कौन पराया कौन
हकीकत कौन फ़साना कौन
दोस्त कौन दुश्मन कौन

ये अंतर्द्वंद उफ्फ
बहता रहता हरदम
कहता रहता हरदम
सोचता रहता हरदम
करता कदमों को बोझिल
भर्मित करता ये दिल
क्षण भर को रुके ये मन
फिर एक अंतर्द्वंद!

गुस्सा

वो आग है जो
दिल दिमाग को देता
बुरी तरह जला
ये है एक बला
और ये एक दीमक भी
जो चाट जाती है
ज़िन्दगी के सुकून
शांति और अच्छे पल
गुस्सा प्यार का रिपू
और अहसासो का शत्रू
गुस्सा वो तेजाब है
जो अपना पराया कौन
ये पहचानता नहीं
जब गिर मन पे
जख्म कुछ ऐसे होते है
ज़िसका कोई मरहम नहीं
गुस्सा किसी का भी
होता कभी हमदम नहीं
प्यार अगर भगवान तो
गुस्सा एक शैतान
गुस्सा कभी सही
गुस्सा कभी गलत
गुस्सा कभी अपनो से
गुस्सा कभी परायो से
मन के विरुद्ध जब होता है होता इसका अवतरन
कभी मन के धरातल में और मस्तिस्क के असमान में
गुस्सा कभी देवताओं में और हरदम शैतान में
गुस्सा एक जहर है
गुस्सा एक कहर है
गुस्सा मौत की ड्गर है
सोच समझ कर दे या कभी न दे इसको निमंत्रण,....।

मैंने देखा है

कुछ लोग जीते जी होते है ज़िन्दा लाश
ढोते अपने ही कांधो पे मैंने देखा है,...!
उनकी हंसी के पीछे
दर्द भरा दर्द छुपा सा
उनके बोझिल कदमो की
हौसलों से भरी चाल मैंने देखा है,...!
कुछ लोग जीते नहीं
काट लेते है उम्र का
बेहद लम्बा सफर मैंने देखा है,...!
कुछ लोग जीते है
अपनी आँखों में
टूटे ख्वाबों के नन्हे-नन्हे
महीन टुकडे लिए
कुछ दिखाते कुछ छुपाते मैंने देखा है,...!
अपनों की तलाश में
बेगानो से चोट खाते हूए मैंने देखा है,...!
खामोश शिकायत से भरे
कुछ चेहरे जो कुछ नहीं
कहके भी कह जाते
कुछ दर्द अनकहे मैंने देखा है,...!
मासूम बच्चों की मासूमियत
उम्र से पहले खोते हूए मैंने देखा है,...!
उन बूढी ठगी आँखों को
जिसने देखे है कई
दर्दनाक मंजर जीवन में मैंने देखा है,...!
घूंघट के अंदर की सिसकी मैंने देखा है,...!
जो लोग देखकर भी
कर देते है अनदेखा
और बढ़ जाते है आगे मैंने देखा है,...!
जज्बातों का झूठा खेल
दोस्ती के स्वार्थी सफर पे
चलते है लोग और दोस्त को गिराकर
ऊपर बढ़ते लोग मैंने देखा है,...!

मन के अंधकार

कोरोना को हराना है
दृढ़ शक्ति देश भक्ति
अब सबको दिखाना है
कोरोना को दूर भगाना है

दूरी रखते हूए भी
सबको करीब लाना है
सभी देशवासी को अब
जागरूक कर दिखाना है

कोरोना को हराना है
समानता का भाव लाना है
दर्द सभी का है
मरहम सबको बनना है

अब डंट कर सबको
सोये से जगाना है
कोरोना को हराना है
ये प्रण कर दिखाना है

कोरोना को अब
जल्द जड़ से मिटाना है
कोरोना को हराना है
देश को जिताना है!

अटूट प्रीत

भगवान को भी इससे है अति अटूट प्रीत
चाहे कृष्ण हो या नटराज
चाहे नारद हो या माँ शारदे
सभी को प्यारा मन का
सुहाना सा अद्भुत संगीत
आदिकाल से ही प्यारा
इंसानों को हर युग में गीत
चाहे पूजा हो पाठ
चाहे सुबह हो या रात
चाहे गम हो या खुशी की
अचानक सी कोई बात
उमंग हर्सोल्लास के लिए
हमेंशा रहा गीत का साथ
जीवन के हर दुख सुख में
संभालने को जज्बात
सभी लेते गीत का साथ
चाहे मोहब्बत हो किसी से
या हो जाये नफ़रत
गीत रहे तैयार हमसफ़र बनकर
तन्हाई का मीत ये गीत
रखे हर हाल में ख़ुश हरदम
ये प्यारे प्यारे गीत
हर मिजाज के है गीत
दोस्ती और दुश्मनी के गीत
हर त्यौहार के गीत
शादी के गीत और तो और
बर्बादी के भी बने गीत
मन का उदगार होता है
तभी तो गीतों से हर युग में
हर धर्म में हर देश में
हर संस्कृति में सबको प्रीत होता है
कितना प्यारा मनमोहक ये गीत होता।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

रीना वर्मा प्रेरणा

मनीष भारद्वाज
नवाबगंज द्वितीय गली, हजारीबाग
झारखण्ड

Email- advocatereena88@gmail.com
Mobile - 9334088818, 7979901059

आपातकाल में सृजन का बहुत महत्व है इंसान नकारत्मकता से सकारत्मकता की ओर बढ़ता चला जाता है, निराशा के भाव हृदय में उत्पन्न नही होते, मस्तिष्क कुछ नया सृजन मे ही व्यस्त रहता है, और ये लम्बा भारी वक्त कैसे कैसे बीत जाता है पता नही चलता, किसी के पास होने न होने का अभाव नही खलता, इंसान मानवता प्रकृति और अंतर्मन के विश्लेषण मे डूबा रहता है और अपने भावों को अभिव्यक्त करता रहता है सृजन होता रहता है खुद से खुद को जोड़ना ही सृजन कहलाता है, सृजन कला आपका सच्चा मित्र हो जैसे मन पर पड़े बोझ को बाहर शब्दो में उकेरता है, मन स्वच्छ निर्मल बोझ रहित हो जाता है ये वही समझा पाता है या समझ पाता है जो सृजन करता है, सृजन इंसान को जागरूकता की ओर ले जाता है, अँधेरे जीवन की एक नई किरण होती है सृजन, इंसान के मन का आईना होती है खुद से किये गए सवाल का जवाब होती सृजन, अंतर्द्वद का हल होता है सृजन से इंसान का जीवन सार्थक होता है सही गलत की पहचान होती है, अंतरा शब्दशक्ति की सक्रियता न होने से इंसान सुसुप्त सा हो जाएगा, और फिर से खुदको जगाने मे बहुत वक्त लग जायगा, अंतरा जिसकी जगी रहती है वही संसार को जगाता है।

एक जिम्मेदार प्रहरी की तरह और खुद भी जागता रहता है एक अद्भुत अभिव्यक्ति का अदम्य साहस होती है अंतरा जिससे सबका जीवन संवरता है।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-176-3

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/